The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

विश्वविद्यालय में सहयोग की संस्कृति: समय की आवश्यकता

डॉक्टर अब्दुल वाहिद फारुकी

एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, जाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444378

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 12-05-2026

Accepted: 29-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

सहयोग की संस्कृति, अन्तःविषय, बहुविषयक, अन्तरविषयकता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता

ABSTRACT

सहयोग की संस्कृति से आशय समान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एकजुट और समर्पण की भावना को प्रोत्साहन देना है। इसके अन्तर्गत ज्ञान, कौशल, संसाधनों, आधारभूत संरचनाओं आदि में भागीदारी और एकरूपता के माध्यम से सहयोग बनाकर रखना शामिल है। सहयोग की संस्कृति के माध्यम से संगठनों, संस्थानों, प्रतिष्ठानों और निकायों में विभिन्न विशिष्टीकरण, अनुभव, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कौशल के लाभों को प्राप्त किया जा सकता है। सहयोग की संस्कृति से विभिन्न विविधता की सीमाओं और उनके दोषों को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। शैक्षणिक संस्थानों विशेषकर विश्वविद्यालयों में इसका अधिक महत्व और योगदान है। इसके द्वारा उच्च शैक्षणिक संस्थान दूसरे संस्थानों को ज्ञान, अनुसंधान, शोध, नवाचार, औद्योगिक कौशल, पेटेंट, बौद्धिक संपत्ति अधिकार आदि के हस्तांतरण, साझेदारी और सहयोग के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। इससे शोध, नवाचार और ज्ञान में एकरूपता, समानता, अनुपालन और सहयोग का संवर्धन होता है। इससे विभिन्न विभागों और कार्यक्षेत्रों में उद्देश्यपूर्ण एवं उपयोगी परिणाम सामने आते हैं। इससे विभिन्न वर्गों और सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहन मिलता है।

प्रस्तावना:

सहयोग, एक या एक से अधिक व्यक्तियों, संस्थाओं, संगठनों आदि के एकसाथ मिलकर, समान उद्देश्यों की प्राप्ति को पूर्ण करने की प्रक्रिया है| इसके अंतर्गत ज्ञान, कौशलताओं, संसाधनों आदि को साझा करके, कुछ और अच्छे ढंग से उत्पादित या प्राप्त किया जा सकता है, जो एक व्यक्ति, अपने स्तर पर प्राप्त नहीं कर सकता| इसके अंतर्गत

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

विशिष्टीकरण, अनुभव और बुद्धिमत्ता के आधार पर बदलते परिपेक्ष में समस्याओं के समाधान को और अधिक प्रभावी और कार्यकुशल ढंग से किया जा सकता है|

वास्तव में, यह एक प्रकार की साझेदारी है, जहाँ व्यक्ति या संस्थान, सहभागिता के माध्यम से अपने विशिष्टीकरण और अनुभव का योगदान करता है| यह विभिन्न संकायों, कार्यक्षेत्रों और विभागों में मिश्रित वार्ता को प्रोत्साहित करता है, जिससे उत्तम और उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त होते हैं, जो पहले की अपेक्षा अधिक प्रभावी होते हैं|

सहयोग की प्रासंगिकता :

संस्थानों, विशेष रूप से विश्वविद्यालयों के समक्ष विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए सहयोग, एक मुख्य भूमिका प्रदान करता है| यह सहयोग अंतःविषयक, बहुविषयक और पारविषयक पारस्परिक क्रिया को प्रासंगिक बनाता है| यदि हम विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों या शिक्षा जगत की बात करें तो वहाँ विभिन्न विषयों के सहयोग के सफल उदाहरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं| जैसे- कीटाणु विज्ञान, आणविक जीव विज्ञान, जीनोम जीव विज्ञान, विषाणु विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, प्रतिरक्षा विज्ञान, टीका अनुसंधान, आनुवंशिकी आदि विषय पारस्परिक सहयोग का ज्वलंत उदाहरण हैं|

इसी प्रकार, वाणिज्य और प्रबंधन विषयों, जैसे- मानव संसाधन, वित्त, लेखा, व्यावहारिक अर्थशास्त्र, कर प्रबंधन, सांख्यिकी, नीति शास्त्र, व्यावसायिक सन्नियम आदि में एकरूपता सहयोग के मार्ग को प्रशस्त बनाती है| वर्तमान युग में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यंत्र अधिगम (मशीन लर्निंग) क्लाउड कंप्यूटिंग, ब्लॉकचेन, वस्तुओं का इंटरनेट (थिंग्स ऑफ इंटरनेट), डेटा (आंकड़ों) की गोपनीयता आदि का पारस्परिक समावेश और सहयोग एक नई शैक्षणिक ज्ञान की संस्कृति को जन्म देता है| सामाजिक विज्ञान के विषयों, जैसे- राजनीतिक विज्ञान, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, दर्शन विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान शोध, अनुवांशिकी आदि में सहयोग की संस्कृति की झलक मिलती है|

उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण और शोध के लिए सहयोग की संस्कृति की आवश्यकता:

1947 में स्वतंत्रता के समय भारत में केवल 20 विश्वविद्यालय और 496 महाविद्यालय थे परंतु उच्च शिक्षा की मांग के बढ़ने के साथ ही शिक्षा क्षेत्र में शीघ्रता से विस्तार हुआ| इस परिवर्तनकारी युग में शिक्षा जगत के विभिन्न क्षेत्रों और विषयों में तेज़ी से विस्तार और विकास हुआ| नई शिक्षा नीति 2020 ने इसे और अधिक महत्व दिया है| इस नीति के अनुसार, विज्ञान का एक छात्र वाणिज्य, मानविकी और कला के विषय पढ़ सकता है, वाणिज्य का विद्यार्थी वैदिक गणित, पुराण, वेद, इतिहास, जीव विज्ञान, जंतु विज्ञान, जर्मन भाषा, संस्कृत और अरबी भाषा आदि, कौशल वृद्धि और मूलवर्धित विषय के रूप में पढ़ने का विकल्प चुन सकता है; इसी प्रकार, एक भाषा और मानविकी का विद्यार्थी विपणन,

लेखांकन, वित्तीय साक्षरता, पर्यावरण विज्ञान, मनोविज्ञान, गणित आदि विषय भी पढ़ सकता है| इस प्रकार का शैक्षणिक सहयोग, सहयोग की संस्कृति का व्यावहारिक उदाहरण है, जिसे नई शिक्षा नीति 2020 में नया स्थान दिया गया है| जब एक विद्यार्थी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश लेता है तो प्रारंभ से ही उसे अन्य विषय पढ़ने के अवसर प्राप्त होते हैं, चाहे वह पशु चिकित्सा, संगीत, चित्रकला, योग, न्यायालिक (फोरेंसिक) विज्ञान का क्षेत्र ही क्यों न हो| इस प्रकार विभिन्न विषयों का ज्ञान लेकर एक विद्यार्थी अंतर्विषयक, बहुविषयक, और पारविषयक को एक साथ पढ़ता है, जिससे सहयोग की संस्कृति के महत्व को एक नई दिशा मिलती है| कोविड-19 के युग में इस संस्कृति का मार्ग प्रशस्त हुआ है, जहाँ पर अंतर-पारस्परिक मुद्दे या विषय पर आधारित शिक्षण प्रणाली विकसित हुई थी|

सहयोग की संस्कृति दो प्रकार की होती है- स्वदेशी सहयोग की संस्कृति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की संस्कृति| इन दोनों संस्कृतियों की अपनी-अपनी सीमाएँ और संभावनाएँ हैं| दो विश्वविद्यालयों के बीच, सम्मेलनों, अधिवेशनों और कार्यशालाओं के माध्यम से विभिन्न विषयों में सहयोग देखने को मिलता है| इससे अनुसंधान नवाचार और साझेदारी के क्षेत्र का विस्तार एवं विकास होता है| इस संदर्भ में भारत सरकार का राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान एक ऐसी संस्था है, जो वैज्ञानिक, शैक्षणिक या औद्योगिक अनुसंधान को बढ़ावा देने, वित्त प्रदान करने और नवाचार की संस्कृति विकसित करने के लिए कार्य करती है| भारत में राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान (नेशनल रिसर्च फाऊंडेशन), राष्ट्रीय शिक्षा नीति और अनुसंधान के लिए रणनीतिक शिक्षा प्रदान करता है| उदाहरण के लिए- BRICS (ब्रिक्स) विश्व की सबसे तेज़ी से उभरती हुई प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का एक समूह है, जिसमें ब्राजील, रूस (रशिया), भारत, चीन और दक्षिण अफ़्रीका शामिल हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के बीच आपसी सहयोग, विकास और वितीय प्रणालियों पर निर्भरता कम करना है| इसी प्रकार, विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों को रूपांतरित करने और उनको रोजगार उन्मुख बनाने के लिए, उद्योग क्षेत्र के विशेषज्ञों की सेवाओं का लाभ उठाना सहयोग की संस्कृति को प्रबल और मज़बूत बनाता है| शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहन देने की योजना (एस पी ए आर सी), मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल है, जो अकादमिक और अनुसंधान सहयोग को प्रोत्साहित करती है| इस प्रोत्साहन योजना का उद्देश्य छात्रों और संकाय की गतिशीलता से जुड़ी अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से उच्च भारतीय संस्थानों और विश्व स्तर पर रैंक प्राप्त सहयोग को सुविधाजनक बनाकर भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करना है|

सहयोग की संस्कृति का परिपेक्ष्य:

इस आधुनिक समय में सहयोग की संस्कृति निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करती है:

(i) विभिन्न विश्वविद्यालयों में, विशेषज्ञों को स्नातक और स्नातकोत्तर के विभिन्न पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए आमंत्रित करना और शोध के नए क्षेत्र की खोज करना

(ii) छात्रों और शोधार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करना, ताकि वे विभिन्न विषयों के नवाचारों से अवगत हो सकें

(iii) विद्यार्थियों को अंतर्विषयक पाठ्यक्रमों में प्रतिभागी बनने के लिए सक्षम बनाना और राष्ट्र के समक्ष समसामयिक चुनौतियों और समस्याओं से अवगत कराना

(iv) विभिन्न विषयों और संस्थाओं के मध्य विद्यार्थियों की गतिशीलता को प्रोत्साहित करना

(v) नई पीढ़ी को अंतर्विषयक शोध से अवगत करा कर उन्हें संपूर्ण ज्ञान प्रदान करना, ताकि वे नवाचार और शोध को ज्ञानवर्धक बना सकें

(vi) शोधार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर, उनकी विश्लेषणात्मक योग्यता को विकसित करना, ताकि वे न केवल अपने विषय की समग्र जानकारी रखें अपितु अन्य विषयों में भी अपनी पकड़ को मजबूत बना सकें

इस संदर्भ में भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय विज्ञान संस्थान एवं अन्य उत्कृष्ट उच्च शिक्षा संस्थान अनेक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं, ताकि विभिन्न हितधारकों अर्थात विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को शिक्षा की समग्रता और संपूर्णता से परिचित कराया जा सके| सहयोग की संस्कृति का ये विचार शोध के क्षेत्र में नवाचार को विकसित और प्रोत्साहित करता है| इस दिशा में त्वरित नवाचार और अनुसंधान हेतु साझेदारी (Partnership for Accelerated Innovation & research) का उल्लेखनीय योगदान है|

इस संस्कृति के माध्यम से राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक- NAAC) को भी मूल्यांकन करने में एक नई दिशा मिलती है, शिक्षा का पूर्ण रूप से विकास होता है और इन शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता का आकलन और मान्यता प्रदान करने में सहायता मिलती है| इससे शिक्षा में लगातार सुधार के मानदंड का निर्धारण होता है, शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाया जा सकता है तथा छात्रों और शोधार्थियों को विश्वसनीय संस्थानों को खोजने में मदद मिलती है और उन संस्थानों में काम करने का अवसर मिलता है|

सहयोग की संस्कृति एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय के मध्य, एक संस्थान से दूसरे संस्थान के मध्य, एक संस्थान और विभिन्न विदेशी संस्थानों के मध्य और एक राष्ट्रीय संस्थान और वैश्विक संस्थाओं के मध्य ज्ञान और शिक्षा के आदान-प्रदान में योगदान करती है|

समय की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन हो रहा है| इससे विभिन्न भाषाएँ विकसित हो रही हैं, अछूते विषय और नई शिक्षा, जैसे- कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, योग, पुरातत्व विज्ञान, संगीत, कला, फोरेंसिक विज्ञान आदि के क्षेत्र में खोज एवं नवाचार हो रहा है|

आज कला, वाणिज्य या विज्ञान का एक छात्र संस्कृत, जर्मन, अरबी, फ्रेंच, चाइनीज़, रशियन, कोरियन आदि भाषाओं को सीखने का इच्छुक है| उसे अब इन भाषाओं को पढ़ने का अवसर मिलता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ये भाषाएँ

अधिक विकसित और अधिक प्रचलित हो जाती हैं| ये सहयोग की संस्कृति को विकसित करने और समझने का एक ज्वलंत उदाहरण है|

सहयोग की संस्कृति की कुछ सीमाएँ, अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ हैंन, जिन पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है| इनमें संसाधनों की कमी और रुचि का अभाव मुख्य हैं|

निष्कर्ष: भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में सहयोग की संस्कृति का महत्व, वर्तमान आधुनिक युग में बहुत बढ़ गया है| यह समय की मांग एवं आवश्यकता है, जो शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष रूप से अनुसंधान और शोध के क्षेत्र में, नवाचार और विशेषज्ञता को एक नई दिशा प्रदान करती है| इससे शिक्षा नीति निर्धारकों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों की सोच, दृष्टि, विचारधाराओं के लिए एक नई दिशा मिलती है| इसके महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता है| भविष्य में सहयोग की ये संस्कृति, शिक्षा जगत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संचालन और परिचालन में मूल्यवान योगदान प्रदान करती है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नया रूप देती है, उसकी संभावनाओं और सीमाओं की ओर ध्यान केंद्रित करती है| सहयोग की ये संस्कृति अंतर्विषयक, बहुविषयक, समावेशीयता और पारविषयकता की अवधारणा को साकार और सफल बनाती है|

संदर्भ

सहयोग की संस्कृति (विस्तारित एवं अद्यतन संस्करण, 2024), ISBN 0-9774617-9-3, ISBN 978-0-9774617-9-0
द बाउंटी इफेक्ट, 2013. ISBN 978-0977461776

लाइब्रेरी जर्नल द्वारा "द बाउंटी इफेक्ट: 7 स्टेप्स टू द कल्चर ऑफ कोलैबोरेशन" की समीक्षा।

पब्लिशर्स वीकली द्वारा "द बाउंटी इफेक्ट: 7 स्टेप्स टू द कल्चर ऑफ कोलैबोरेशन" की समीक्षा।

जेम्स सरोवेस द्वारा लिखित पुस्तक "द कल्चर ऑफ कोलैबोरेशन" की समीक्षा (27 अप्रैल, 2008)।

जेम्स सरोवेस द्वारा "द वाशिंगटन टाइम्स" में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा: "द बाउंटी इफेक्ट" और "क्यूरेटेड कल्चर"।

"सहयोग के लिए तकनीक से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है" – ली गोम्स द्वारा लिखित, एमआईटी टेक्नोलॉजी रिव्यू।

डॉनी ड्यूश द्वारा सहयोग की संस्कृति पर सीएनबीसी का साक्षात्कार – "कोलैबोरेशन नाउ" प्राइमटाइम स्पेशल।

अवाया इनोवेशन्स मैगज़ीन में एरिक लाई द्वारा "सहयोग विशेषज्ञ इवान रोसेन के साथ प्रश्नोत्तर" लेख प्रकाशित किया गया है।
टैलेंट मैनेजमेंट पत्रिका – "क्या सहयोग को जबरदस्ती थोपा जा सकता है?" – केली क्रिटनी द्वारा।

कम्युनिकेशन वर्ल्ड। "सहयोगात्मक संस्कृति की कुंजी।" किम ए. हैनसन द्वारा लिखित "द कल्चर ऑफ़ कोलैबोरेशन" की समीक्षा।

टैलेंट मैनेजमेंट पत्रिका। "क्या सहयोग को जबरदस्ती थोपा जा सकता है?" केली क्रिटनी द्वारा ।